(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 8] पंचम् विधान सभा के अष्टम सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 1

मंगलवार

6 मई, 1975

विधान सभा की बैठक प्रातः 8 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारंभ हुई।

(श्री रामकिशोर व्यास, अध्यक्ष, पदासीन)

स्थगन प्रस्तावों की प्राप्ति के बारे में अध्यक्षीय घोषणा

श्री अध्यक्ष : अब तक स्थगन प्रस्तावों की सूचना सदन की बैठक प्रारम्भ होने के एक घन्टे तीस मिनिट पूर्व देने का नियम है, लेकिन सदन का समय प्रातः 8.00 बजे से होने के कारण उक्त नियम के पालन में कुछ असुविधा माननीय सदस्यों को होगी, ऐसा आभास होता है। अतः यह तय किया गया है कि माननीय सदस्य स्थगन प्रस्ताव की सूचना प्रत्येक दिन मध्याह्न पश्चात् 4.30 बजे तक विधान सभा सचिवालय में दे सकते हैं।

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

दिवंगत डा. एस. राधाकृष्णन्, सर्व श्री निरंजन नाथ आचार्य, रमेशचन्द्र भार्गव, श्री राम बासोतिया, खंडूभाई देसाई व कुमारी पद्मजा नायडू को श्रद्धांजलि

श्री हरिदेव जोशी (मुख्य मन्त्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा के पिछले सत्र के अवसान के बाद में राजस्थान में और इस देश में कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जो मन को हिला देने वाली थीं।

हमारे देश के एक महान् विचारक, शिक्षक, लेखक, राजनीतिज्ञ और हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का देहावसान पिछले दिनों हुआ। डॉ. राधाकृष्णन् भारतीय गगन के चमकते हुए सितारे थे। उन्होंने शिक्षा और दर्शन के क्षेत्र में भारत के नाम को संसार में आगे बढ़ाया और संसार के विद्वत्जनों में उनकी ख्याति एक प्रकार से भारत की ख्याति बन गई। शायद स्वामी विवेकानन्द के बाद में संसार को प्रभावित करने वाला इतना बड़ा व्यक्तित्व दूसरा नहीं हुआ। स्वामी विवेकानन्द ने अपने आदर्शों और सिद्धान्तों के जरिये भारत के दर्शन को संसार के समक्ष रखा और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने शिक्षा जगत में अपने विचारों को रखते हुए पूरे संसार को भारतीय वाङ्गमय और भारतीय दर्शन से प्रभावित किया। डॉ. राधाकृष्णन् का व्यक्तित्व बहुमुखी था। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के वाइस-चान्सलर के रूप मे उन्होंने प्रतिष्ठा अर्जित की। एक समय था, जब देश की आजादी के लिये संघर्ष हो रहा था, उस समय बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी देश की आजादी के लिये संघर्ष करने वालों का केन्द्र बन गई

Page No 2

(2)

(श्री हरिदेव जोशी)

थी, उस समय यह कहा जाने लगा था कि डॉ. राधाकृष्णन को अपने प्रभाव का उपयोग करके इस प्रकार की गतिविधियों को रोकना चाहिए, तब उन्होंने हंस करके यह कहा था कि उस समय मुझसे यह अपेक्षा की जा रही थी कि जो लोग देश की आजादी चाहते थे उनसे मैं यह कहूं कि नहीं, तुम आजादी के लिये मत लड़ो। एक महान् देश-भक्त के रूप में वे उस समय उभर कर आगे आये और उसके बाद वे विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पदों पर रहे। हमारी राज्य सभा के चेयरमैन और भारतीय गणराज्य के उपराष्ट्रपति के रूप में उन्होंने प्रिसाइडिंग ऑफिसर की एक महान परम्परा को प्रतिष्ठापित किया। एक महान् मित्र देश में वे भारत के राजदूत के रूप में रहे, उस समय ऐसा समझा जाता था कि एक फिलॉसॉफर और शिक्षक फिलोसॉफी के क्षेत्र में सफल हो सकता था, अन्य क्षेत्र में वह उतना सफल नहीं हो सकता जितना शिक्षक के रूप में सफल हो सकता था। फिर वे इस राष्ट्र के महान् पद, राष्ट्रपति पद, पर आसीन हुए। एक प्रकार से डॉ. राधाकृष्णन के राष्ट्रपति बनने से राष्ट्रपति पद गौरवान्वित हुआ और ऐसा समझा जाने लगा कि उनका महान् दर्शन एक गरिमामय पद पर आसीन है।

अध्यक्ष महोदय, जो जन्मता है वह मरता है–इस फिलॉसॉफी को स्वयं राधाकृष्णन् ने इतनी विगत से लिखा है कि जीवन काल में जो व्यक्ति जिस ढंग से जीये, मरने के बाद में उसी ढंग से याद किया जाता रहे। राधाकृष्णन् आज हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु ऐसा लगता है कि जो रिक्तता उनके कारण से पैदा हुई है वह निकट भविष्य में पूरी होती हुई दिखाई नहीं देती। एक महान् शिक्षक होने के नाते आज भी उनका जन्म दिवस शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। हम ऐसा समझते हैं कि उनकी शिक्षा इस देश को हमेशा-हमेशा प्रभावित करती रहेगी। उनका हमारे बीच में से चला जाना न केवल भारतीय जगत बल्कि पूरे जगत का नुकसान है, इसकी पूर्ति निकट भविष्य में होती हुई नहीं दिखाई देती।

मैं अपनी ओर से और इस सदन की ओर से उनकी आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके पीड़ित परिवार के प्रति अपनी सम्वेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, विधि की विडम्बना है कि हमें एक के बाद दूसरे और कुछ झटके बर्दाश्त करने पड़ रहे हैं। इस सदन के एक अत्यन्त सम्माननीय सदस्य, जो ठीक सामने थोड़े दिन पहले तक बैठा करते थे, श्री निरंजननाथ जी आचार्य, वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, आचार्य जी हममें से एक थे इसलिए उनके बारे में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

सबेरे चार बजे मेरे कमरे के टेलीफोन की घण्टी खटखटाई। मैंने टेलीफोन उठाया तो समाचार मिला कि आचार्य जी नहीं रहे हैं। समझ में नहीं आया, यह हुआ कैसे और क्यों हुआ। रात को ग्यारह बजे के लगभग मेरे पास उनका टेलीफोन आया था। उस समय मेरे कुछ साथी मेरे पास बैठे हुए थे। उन्होंने अपने उसी मजाकिया लहजे में पूछा, क्या हो रहा है? मैंने कहा, अमुक अमुक साथी मेरे सामने बैठे हुए हैं। उनसे बात हो रही है। उन्होंने फिर उसी मजाकिया लहजे में कहा, मेरे सामने भी अमुक अमुक लोग

(श्री हरिदेव जोशी)

बैठे हुए हैं और उनसे बात हो रही है। आपकी उनसे बात हो रही है, मुझसे बातें कब होंगी, हमसे कब बात होगी ? मैंने कहा, आप कहें तो अभी, आप चाहें तो कल सवेरे। उन्होंने यह कह कर, अच्छी बात है, कल सवेरे, टेलीफोन रख दिया। और अध्यक्ष महोदय, वह कल का सवेरा फिर नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय, कई लोग आचार्य जी को पसन्द करते थे, कई लोग उन्हें नापसन्द भी करते थे। अध्यक्ष महोदय, इन पिछले वर्षों में हमने उनको बहुत नजदीक से देखा था। कई उतार-चढ़ाव के बीच में देखा है। ऐसी स्थितियों में भी देखा है जब आदमी टूट जाता है। किन्तु आचार्य जी एक ऐसे व्यक्ति थे जो झुके भी नहीं, टूटे भी नहीं।

अध्यक्ष महोदय, आपके आसन पर बैठ कर उन्होंने इस सभा का संचालन किया और उसके बाद वह दूसरे सत्र में यहां से उतर कर वहां जाकर बैठे। किन्तु कहीं यह मालूम नहीं पड़ रहा था कि आचार्य जी अपनी स्थितियों को सम्भाल नहीं पा रहे हैं।

वह मित्रों के मित्र थे, विरोधियों के विरोधी थे। मित्रता भी खासी करते थे और विरोध भी खासा करते थे। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था, आकर्षक था। बहुत अच्छे वकील, प्रतिभाशाली वकील, अच्छे लेखक, अच्छे संगठनकर्ता के रूप में वह याद किये ही जायेंगे। किन्तु बहुत कम लोग उनके आध्यात्मिक पक्ष को जानते हैं। मुझे उनके आध्यात्मिक पक्ष को भी समझने का मौका मिला था और मुझे ऐसा लगता है कि उनके जीवन के अन्दर जो क्षमता थी, वह उनके आध्यात्मिक जीवन की क्षमता, ताकत की क्षमता थी।

अध्यक्ष महोदय, पिछली बार जब कुछ मित्रों के देहावसान के अवसर पर यहां पर व्यक्त किया जा रहा था, तब पता नहीं उस मानसिकता के अन्दर अथवा कैसे उन्होंने एक वाक्य कहा था, जो शायद इस सदन के रिकार्ड पर हमेशा बना रहेगा, जिसमें उन्होंने अपने बारे में भी कुछ कह दिया था। जब उनसे जीवन और मृत्यु के बारे में चर्चा होती तो यह गीता का यह श्लोक कहा करते थे :

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय'

जैसे मनुष्य पुराने कपड़े को छोड़ कर, फटे हुए कपड़े को छोड़कर और नया वस्त्र धारण करते हैं, ठीक उसी प्रकार यह आत्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नये शरीर को धारण करती है। वैसे यह कहना बहुत आसान है, किन्तु जीवन में उसे उतारना बहुत मुश्किल है। अध्यक्ष महोदय, मैंने कुछ नजदीक से ऐसे मौकों पर उन्हें देखा है। उनके लड़के का कार-एक्सीडेंट में देहावसान हो गया तो वह कमरे में पीड़ित लडके की रोती हुई मां को संभालने के लिये उसके पास में बैठकर, उसे दिलासा देकर, शायद दो आंसू उसके साथ में बहा कर वहां से चल कर फिर वापिस बाहर बैठे दोस्तों के साथ उसी प्रकार हंसी–मजाक करते और जिन्दगी की जिन्दादिली का परिचय देते। एक मित्र अस्पताल में एक बार, दो बार, तीन बार जब देखने के लिये गये, मेरे सामने की बात है, और उनके बच्चे के बारे में जब बार बार उनको कहा, तो उन्होंने तीसरे दिन कह दिया, महरबानी करके अब चौथे दिन यह बात मेरे सामने मत छेड़ियेगा।

Page No 4

(श्री हरिदेव जोशी)

इस प्रकार का व्यक्तित्व श्री आचार्य जी का था। वह हम लोगों के तो बहुत नजदीक के साथी थे, हमारे अजीजों में से एक थे, इसलिए चोट कुछ अधिक गहरी भी है, पीड़ा भी अधिक गहरी है। उनको लेकर कई लोगों के बीच कई प्रकार की गलतफहमियां हुईं।

उदयपुर क्षेत्र में से एक ऐसा व्यक्तित्व उठा है, मैं यह कह सकता हूं कि उनके प्रशंसक और उनके विरोधी-सभी एक स्वर से यह कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति चला गया है जो अपना मुकाबला नहीं रखता था। मैं अपने मित्र एवं महान् विद्वान, लेखक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री निरंजननाथ जी आचार्य के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इनके अतिरिक्त श्री रमेशचन्द्रजी भार्गव, जो अजमेर के निवासी थे, अजमेर से विधान सभा के सदस्य थे, वहां के स्पीकर रहे, और श्री श्रीराम जी बासोतिया की आत्माओं के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। दोनों महानुभाव प्रतिभा-सम्पन्न थे। श्री रमेशचन्द्र भार्गव का घराना तो आजादी की लड़ाई में अगुआ घरानों में से रहा है। श्री रमेशचन्द्र प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। श्री बासोतिया नवलगढ़ के जाने माने हुए लोगों में से एक थे। उन दोनों महानुभावों के प्रति भी मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री **लक्ष्मणसिंह** (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, डॉ. सर्वपल्ली···

श्री **हरिदेव जोशी**: I may be excused.

अध्यक्ष महोदय, मुझे क्षमा कीजिए अपनी कमजोरी के लिए।

इसी बीच में श्री खंडूभाई देसाई और कुमारी पद्मजा नायडू का भी देहावसान हुआ है। श्री खंडूभाई देसाई महान् स्वतंत्रता सेनानी, महान् नेता और हमारे मार्गदर्शक थे। उन्होंने लेबर मूवमेंट के क्षेत्र में जो काम किया है वह अद्वितीय है। कुमारी पद्मजा नायडू श्रीमती सरोजिनी नायडू की महान् पुत्री और उस परिवार की महान धरोहर थीं। समाज सेवा के क्षेत्र में उनकी सेवायें अद्वितीय थीं। मैं उन दोनों के प्रति भी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री **लक्ष्मणसिंह** : अध्यक्ष महोदय, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् एक बिरले ही महान् पुरुष थे। दर्शन शास्त्र में, मैं समझता हूं, प्लेटो के बाद उनका सानी विश्व में शायद ही हुआ हो। वे महान् दार्शनिक, महान् विद्वान् और भारतवर्ष के सपूतों में एक अद्वितीय थे। बड़ा ही सादा जीवन व्यतीत करते थे और उनका जो लिबास था, सादा होते हुए भी बहुत शानदार और प्रभावशाली था। वे रूस में हमारे राजदूत भी रहे हैं और उस समय जब कि मार्शल स्टालिन रूस के राष्ट्रपति थे, मार्शल स्टालिन की परम्परा थी कि साधारणत: विदेशी राजदूतों से नहीं मिला करते थे। मार्शल स्टालिन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि न केवल वह उनसे मिले, अपितु डॉ. राधाकृष्णन् के द्वारा भारतवर्ष से मधुर संबंध स्थापित करने के लिए उन्होंने बुनियाद रखी।

अध्यक्ष महोदय, डॉ. राधाकृष्णन् ने कई पुस्तकें लिखीं। उनमें मैं समझता हूं 'हार्ट आफ हिंदुस्तान' नामक पुस्तक और अंग्रेजी भाषा में उनका गीता का अनुवाद, ऐसे

(श्री लक्ष्मणसिंह)

वर्क्स हैं जो सदियों तक हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

डॉ. राधाकृष्णन् अंग्रेजी लिट्रेचर के मास्टर थे। एक समय, मुझे याद है, जब मिस्टर एडिन, जो ब्रिट्रेन के प्रधान मंत्री रह चुके हैं, भारतवर्ष में आए, उन्होंने दोनों सदनों के जॉइंट सेशन को एड्रेस किया, उस समय राज्य सभा के चेयरमैन डॉ. राधाकृष्णन् थे। उन्होंने अपने 10 मिनट के भाषण के अंदर, मिस्टर एडिन ने जो आधे घंटे तक भाषण दिया, उसको घूमिल कर दिया। डॉ. राधाकृष्णन् पेशेवर राजनीतिज्ञ नहीं थे। जब वे प्रोफेसर आफ फिलॉसॉफी आक्सफोर्ड में थे तब मालवीयजी ने सोचा कि ऐसे महान् दार्शनिक विदेशों में जाकर अपनी प्रतिभा बताए और भारतवर्ष को कोई लाभ नहीं मिले, यह सर्वथा अनुचित है। फर्स्ट राऊंड टेबल कान्फ्रेंस में मालवीयजी और गांधीजी ने डॉ राधाकृष्णन् को भारत वर्ष में आने के लिए आमादा किया और वे कलकत्ता यूनिवर्सिटी और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर बने।

अध्यक्ष महोदय, डॉ. राधाकृष्णन् 10 वर्ष तक राज्य सभा के चेयरमैन रहे। प्रथम राज्य सभा के चेयरमैन जब वे थे तो मेरा सौभाग्य था राज्य सभा में बैठने का उन्होंने जो परम्परायें, बुनियादें और कन्वेन्शन्स स्थापित किये वे प्रेरणादायक रहे। तत्पश्चात् वह राष्ट्रपति बने। डॉ. राधाकृष्णन् ने राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया। अमुक व्यक्ति ऐसे होते हैं जो राष्ट्रपति बनने पर सुशोभित होते हैं किन्तु डॉ. राधाकृष्णन् ने राष्ट्रपति बन कर उस पद को सुशोभित किया। डॉ. राधाकृष्णन् को अनेक डिग्रीज और उपाधियां मिली-थीं, उसमें उनको इंग्लैंड से 'आर्डर आफ मेरिट' व रूस और फ्रांस से जो डिग्रियां मिलीं और वे भारत रत्न की उच्च उपाधि से सुशोभित हुए।

डॉ. राधाकृष्णन् के निधन से एक विश्व विख्यात व्यक्ति हमने खो दिया है, और उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना अत्यंत कठिन है।

उस महान् दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए मैं प्रार्थना करता हूं और उनकी पावन स्मृति के प्रति मेरे दल और मेरी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह भी प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को यह गहरा दुःख सहन करने की शक्ति ईश्वर दे।

अध्यक्ष महोदय, पण्डित निरन्जननाथ आचार्य के सम्बन्ध में सदन के नेता ने जो कुछ भी कहा है उसका मैं समर्थन करता हूं। उनकी आकस्मिक मृत्यु मेरे लिये तो एक बड़े ताज्जुब का और दुख का विषय है।

अध्यक्ष महोदय, पंडित निरन्जननाथजी आचार्य कांग्रेस के एक उच्च कोटि के नेता थे। उदयपुर डिवीजन में चूंकि मेरा जन्म हुआ है और वह भी उदयपुर डिवीजन के थे, वहां पर जन्म होने के कारण मेरा उनसे काफी सम्बन्ध रहा। वह एक महान् राजनैतिक नेता थे, तथा एक महान् राजनैतिक दृष्टिकोण रखने वाले एक महान् संगठन कर्ता थे। अध्यक्ष महोदय, वह विधान सभा के अध्यक्ष रहे और राज्य के मन्त्री तथा उप-मन्त्री भी रहे। सन् 1972 में वे कांग्रेस के प्रत्याशी के खिलाफ में खड़े हुए और चुनाव में लड़कर हजारों

Page No 6

(6)

(श्री लक्ष्मणसिंह)

वोटों से सफल हुए । अध्यक्ष महोदय, यह भी इस बात का द्योतक है कि वे अपने क्षेत्र के मतदाताओं में कितने ज्यादा लोकप्रिय थे । वे सम्भवतः कांग्रेस को छोड़ना तो नहीं चाहते थे लेकिन उन्हें कांग्रेस छोड़ना पड़ा । इसके अलावा वे कांग्रेस में वापिस मिलना चाहते हों और नहीं मिल सके हों लेकिन उन्होंने विधान सभा में कभी भी अपना सन्तुलन नहीं खोया, और उन्होंने अपना वर्चस्व यहां पर उसी तरह निभाया जैसा कि एक आदमी को निभाना चाहिये ।

अध्यक्ष महोदय, रमेशचन्द्र जी भार्गव और श्री श्रीराम बासोतिया दोनों ही विधान सभा के सदस्य रहे थे । मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से खास तौर से पंडित श्री निरन्जननाथ आचार्य को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । और इनके सभी के शोक सन्तप्त परिवारों को ईश्वर इस महान् दुःख को सहने की शक्ति दे यह प्रार्थना करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, श्री खन्डू भाई देसाई और सुश्री पद्मजा नायडू दोनों ही कांग्रेस के वरिष्ठ व्यक्ति थे । उन्होंने हमारे देश में कई उच्च पदों को सुशोभित किया । श्री खन्डू भाई देसाई भारत सरकार में मंत्री पद पर रहे, और वे मजदूरों के नेता थे । कुमारी पद्मजा नायडू पश्चिमी बंगाल की राज्यपाल रहीं और वह हमारे देश की महान भारत कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू की सुपुत्री थीं । मैं इन दोनों ही महान् दिवगंत आत्माओं के प्रति अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही खेद का विषय है कि हम इस सदन में थोड़े ही दिन के बाद मिल रहे हैं तो इतने व्यक्तियों के निधन पर हमें शोक प्रस्ताव पास करना पड़ रहा है । इस एक महीने के अर्से में हमने अपने देश और प्रान्त के 6 महान् व्यक्तियों को खो दिया है । इसके लिए सदन को दुःख होना स्वाभाविक है ।

अध्यक्ष महोदय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, जो कि हमारे देश के राष्ट्रपति रहे हैं, हमारे देश के उन महान् व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने न केवल भारतवर्ष में ही बल्कि भारत वर्ष का नाम तमाम विश्व में ऊंचा किया है । उनका नाम हमारे यहां के महान् नेता महात्मा गान्धी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों, जिनका नाम दुनियां के हर कौने कौने में प्रसिद्ध है, की श्रेणी में आता है डॉ. राधाकृष्णन् एक महान् दार्शनिक और एक महान शिक्षक के रूप में दुनियां के हर कौने में जाने जाते रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, डॉ. राधाकृष्णन् एक महान् दार्शनिक और एक महान् शिक्षक होते हुए भी एक महान् राजनेता थे । राजनेता के रूप में उन्हें जो भी जिम्मेदारियां दी गयीं उन्हें उन्होंने दक्षता से निभाया । यह उन्हीं की व्यक्तिगत देन है कि आज भारतवर्ष और सोवियत रूस में इतनी प्रगाढ़ मैत्री स्थापित हो सकी । इसकी बुनियादी नींव डॉ. राधाकृष्णन् द्वारा ही रखी गयी थी । उन्होंने राज्य सभा में अध्यक्ष के रूप में, उप राष्ट्रपति के रूप में और राष्ट्रपति के रूप में जो कार्य किया वह सराहनीय है । अध्यक्ष महोदय वह किसी भी दल के नहीं थे लेकिन उन्होंने हमारे देश में काफी सम्मान और

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

प्रतिष्ठा का स्थान प्राप्त किया और उन्हें भारत रत्न, की उपाधि दी गयी । मैं अपनी ओर अपने दल की ओर से इस महान् विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, इस दौरान हमें हमारे एक पुराने साथी और खास तौर से हम एक ही बेंच पर बैठने वाले साथियों को अपने एक साथी श्री निरंजननाथ जी आचार्य को अपने बीच में न देखकर बहुत ही दुःख होता है। आचार्य जी और हम लोग यहां पर विधान सभा में जब से आये हैं सन् 1962 से उनको ट्रेजरी बेन्चेज पर और आपके आसन पर काम करते हुए देखने का हमें अवसर मिला और बाद में एक विरोधी दल के सदस्य के रूप में भी उनको अपनी जिम्मेदारियां निभाते हुए भी देखा है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि वे चाहे ट्रेजरी बेन्चेज पर रहे हों, चाहे अपोजीशन बेन्चेज पर रहे हों या चाहे अध्यक्षीय आसन पर रहे हों, उन्होंने अपने व्यक्तित्व का प्रभाव पूरी तरह से सब ही माननीय सदस्यों पर छोड़ा है और मैं उनके व्यक्तित्व से काफी प्रभावित रहा हूं । अध्यक्ष महोदय, उनके जीवन में इतना उतार-चढ़ाव होते हुए भी उनमें विनोद की भावना काफी थी और वे गम्भीर से गम्भीर स्थिति में भी एक विनोदपूर्ण स्थिति पैदा कर सकते थे ।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी और अपने दल की ओर से उन महान् आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक–संतप्त परिवार को सहानुभूति भेजता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, इसी दौरान में सुश्री पद्मजा नायडू और श्री खंडूभाई देसाई का भी देहावसान हुआ है। ये दोनों भी महान् आत्मायें देश की प्रबुद्ध लीडर्स रही हैं और इन्होंने भी अपने अपने क्षेत्र में देश की महान् सेवायें की हैं । मैं इन दोनों ही महान् आत्माओं के प्रति अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय, श्री रमेशचन्द्रजी भार्गव और श्री श्रीराम बासोतिया इस सदन के सदस्य रहे हैं । वे भी इस दौरान में अब नहीं रहे हैं । मैं उनके प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

श्री रामकिशन (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, सर्व पल्ली डॉ. राधाकृष्णन् दर्शन के ज्ञाता थे या नहीं शायद इसमें मतभेद हो, और कुछ का यह भी मानना था कि जो कुछ डॉ. राधाकृष्णन् ने दर्शन के बारे में लिखा है वह नया नहीं है। किन्तु दुनिया के दार्शनिक और विचारक एक बात पर एक मत थे कि उन्होंने दर्शन की नयी व्याख्या की और पुरानी चीज को जिस प्रकार से प्रदर्शित किया वह एक आदर्श वस्तु बन गयी ।

अध्यक्ष महोदय, डॉ. राधाकृष्णन् की विद्वता उनके द्वारा राष्ट्रपति की हैसियत से किये गये कार्य-कलाप, राज्य सभा में उनके द्वारा दिये गये निर्देशन, इन सब को आज हम देखते हैं तो हमें यह मानना पड़ता है कि काफी समय होने तक भी इस महान् आत्मा की पूर्ति होना संभव नहीं है ।

विशेष तौर पर जब वे रूस में राजदूत थे, एशियाई राष्ट्रों में वे सबसे पहले राजदूत

(श्री रामकिशन)
थे जो स्टालिन से मिले थे। उन्होंने उसके पश्चात् एक पुस्तक लिखी 'आत्मवेदना'। स्टालिन से उनकी खुल कर चर्चा हुई थी। उसके पढ़ने के बाद हिन्दुस्तान और उसके बाहर भी भारत को जिस रुचि और दृष्टि से समझने की कोशिश की वह हमारे देश के लिये उनकी महान् देन है। हम यह आशा करते हैं कि हिन्दुस्तान के लोग उन व्याख्याओं को आगे बढ़ायेंगे जिससे कि समूची मानव जाति को एक परिवार के रूप विकसित कर सकें।

सदन के माननीय नेता डॉ. राधाकृष्णन् के बारे में जो कुछ कहा वह बहुत थोड़ा है। उनके बारे में और कितना ही बोला जा सकता है। किन्तु कितने ही मामले ऐसे हैं, दर्शन के बारे में कुछ दिया है, लेकिन उन्होंने भारतीय संस्कृति का जितना खयाल रखा है और जितना इसको सम्मान पहुंचाया है उतना किसी राजनेता ने उस दृष्टि से उस चीज को पूरा नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक आचार्य जी का सम्बन्ध है उनके बारे में हम लोगों के लिये कुछ कहना मुश्किल है। मेरा उनसे परिचय जब वे उपाध्यक्ष थे तो एक जगह पर अचानक हुआ और वह परिचय मित्रता के रूप में बढ़ता गया। जहां तक उन की विद्वत्ता का प्रश्न है, चाहे वे मित्र के रूप में हों चाहे अध्यक्ष पद पर रहे हों, चाहे वे निर्दलीय सदस्य के रूप में रहे हों, उनके मन में कहीं कोई विकार, कहीं कोई कमजोरी या कोई हीन भावना नहीं देखी। हमेशा वे प्रसन्न चित्त रहते थे चाहे किसी भी स्थिति में रहे हों और जब मृत्यु का प्रसंग आया, मै सबसे पहले पहुचा सुरेन्द्रजी व्यास के साथ, उस समय भी जितनी उनके मन में दृढ़ता थी वह किसी साधारण पुरुष के लिये संभव नहीं है, उतनी दृढ़ता साधारण पुरुष के लिए रखना संभव नहीं हो सकता।

उनके अपने विचार थे और उनकी अपनी काम करने की शैली थी, उनका लिखने का अपना एक अजीब तरीका था। उन्होंने साहित्य-सृजन भी किया था। जहां उनकी कल्पना होती थी वहां उसके पीछे विशिष्ट व्याख्या होती थी और जो उहोंने दो चार पुस्तकें लिखी हैं हवाई दुर्घटना की आशंका के समय हम देखते हैं कि कितना सजीव चित्रण मनुष्य की भावना का किया है आचार्यजी आज के मानव का कितना उत्थान कर पायेंगे हम कह नहीं सकते।

आचार्य जी, सब ही प्रकार के लोगों के मित्र थे और आज सब यह अनुमान लगाते हैं कि उनसे अधिक घनिष्ट कोई मित्र नहीं। उनमें अपने आचरण के द्वारा और स्नेहशीलता के कारण लोगों को मदद पहुंचाने की भावना अपने आप में एक विलक्षण तरीके से थी जिससे हम प्रभावित हैं। सन् 1972 में अपने निर्वाचन क्षेत्र में उन्होंने सम्मेलन बुलाया, मुझे भी बुलाया और डांगे साहब को भी बुलाया। दोनों को अलग अलग बुलाने के पीछे क्या उदेश्य था। जो सम्मेलन बुलाया और जो व्याख्या की उन्होंने उसको सुन कर मैं स्तब्ध रह गया कि इसके पीछे इतनी बड़ी बात हो सकती है।

जहां तक क्षेत्र के कल्याण की भावना का प्रश्न था, उन्होंने अपने क्षेत्र की हर प्रकार से मदद की और वे ऐसा सोचते थे कि डांगे साहब की मार्फत वे अधिक राशि सैन्टर से ला सकेंगे। उनको बुलाने में एक मात्र बात साफ थी। आदिवासियों के प्रति अपने क्षेत्र के उन मानवों के प्रति उनकी

(श्री रामकिशन)

दयनीय दशा पर उनके दिल में कितना दर्द था यह मैंने प्रत्यक्ष रूप में देखा है । हम डबोक आ रहे थे । एक एक्सीडेन्ट हो गया था और गाय मर गयी थी । एक औरत रोती हुई मिली गाय दूसरे की कार से टकरा कर मर गयी थी । आचार्यजी के पास पचास रुपये ही थे । वे उसको सौ रुपया देना चाहते थे । पूछा दूसरे से, कहा कि 50) रुपये ही हैं । उसके पीछे उनकी एक ही बात थी । ये भील इतने गरीब हैं, उनकी गाय के मरने का मतलब है उनकी जिन्दगी बरबाद हो जाना और सौ रुपये बिना गाय आ नहीं सकती । एक राजनेता का दृष्टिकोण इस बात का सबूत है कि किस प्रकार वे मानव मात्र के प्रति और दयनीय स्थिति वाले उन आदिवासियों के प्रति कितने संवेदनशील थे ।

अध्यक्ष महोदय, हम लोग आचार्यजी के व्यक्तित्व की, उनकी विद्वत्ता, एक मित्र के रूप में और सलाहकार के रूप में उनकी जितनी व्याख्या करें वह कम है । जब हमें सलाह की आवश्यकता होती थी, अध्यक्ष पद पर रहते हुए भी, जिस पद पर रह कर निष्पक्षता रखना आवश्यक है, उनसे हमें निष्पक्ष सलाह मिला करती थी ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आचार्यजी को अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

जहां तक श्री खंडूभाई देसाई और सुश्री पद्मजा नायडू के देहावसान का सम्बन्ध है, राष्ट्रीय परम्परा के प्रतीक महानुभावों का आज अवसान होता चला जा रहा है । खास तौर से श्री खंडूभाई देसाई ने आजादी की लड़ाई में बड़ा भारी योगदान दिया था, विशेष कर श्रमिक क्षेत्र में राष्ट्रीय भावनाओं के साथ उनको जोड़ा था, यह खंडूभाई देसाई का अपने आप में एक विलक्षण कार्य है । उनको भी मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री बाबोतिया और श्री रमेशचन्द्रजी भार्गव ये भी सदन के सदस्य रहे हैं, और बाबोतियाजी से मेरा व्यक्तिगत परिचय था । मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

देश की इन महान् विभूतियों ने जो विशिष्ट बातें छोड़ी हैं उनकी विशिष्टता का अनुकरण करने का हम प्रयत्न करें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है । इन्हीं शब्दों के साथ मैं इन सब दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री मोहरसिंह (सादुलपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय कुछ महान आत्माओं के नश्वर शरीर आज हमारे बीच में न रहने से गहरा दुःख है ।

जहां तक डा. राधाकृष्णन् का प्रश्न है, उनके सम्बन्ध में बहुत खुलासा रूप से विभिन्न महानुभावों के द्वारा बता दिया गया है । विद्वान्, शिक्षक, दार्शनिक, राजनेता, आदि गुणों से वे विभूषित थे । 86 वर्ष की आयु तक उन्होंने जिस प्रकार से अपनी विद्वत्ता और अन्य कार्यकलापों की छाप संसार पर छोड़ी है उससे वह आज अमर हैं । जहां तक दार्शनिक और विद्वत्ता का प्रश्न है, गीता की उपनिषदों की व्याख्या उन्होंने की । मानव उत्थान की जिस प्रकार उनकी विचार धारा थी और जिस प्रकार से उन्होंने एक अद्वितीय छाप इस संसार के पटल पर छोड़ी

(10)

(श्री मोहरसिंह)
है वह उनके विचारों से ओतप्रोत थी व्यक्ति कभी भुला नहीं सकता ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से उनके अन्दर विद्वता कूट कूट कर भरी हुई थी। मानवता के प्रति उनका जितना आदर प्रेम और स्नेह था वह भुलाया नहीं जा सकता। जब मैं बीकानेर जेल में सन् 65 में डी. आई. आर. में गिरफ्तार था पाकिस्तान के हमले के दौरान उनका शाम का जो रेडियो भाषण था वह मानव के प्रति कितनी संवेदना से ओतप्रोत था, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से हमारे बीच में आज निरंजननाथजी आचार्य नहीं रहे । हमें उनके गुणों की स्मृति के रूप में अपने अन्दर आत्मसात् करना चाहिए । उनके अन्दर विनोदी स्वभाव, हाजिर जवाबी, अच्छी विद्वता, साहित्य-निष्ठा, संगठन-शक्ति सभी प्रकार के गुण थे । विचारों की भिन्नता होते हुए भी उनके अन्दर जो गुण थे, उनको हम आत्मसात् करें, धारण करें तो मैं समझता हूं बहुत बड़ी बात होगी और उनकी सच्ची स्मृति होगी ।

इस प्रकार चार सदस्यों का नाम आया, अध्यक्ष महोदय, बड़ी विडम्बना है कि विगत सात महीनों से प्रदेश की और देश की विभूतियां हमारे बीच से जा रही हैं ।

जहां तक नाम आया रमेश जी भार्गव का और साथ में पद्मजा नायडू का नाम आया, इसी तरह खण्डूभाई देसाई का भी नाम आया और इसी प्रकार श्रीराम बासौतिया का नाम आया, एक एक के अन्दर अपने अपने क्षेत्रों के गुण निराले थे । पद्मजा नायडू ने भारत-कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू की सुपुत्री के रूप में कितना देश के अन्दर काम किया, कोई उनके कामों को भूल नहीं सकता है । बासौतिया जी व्यापारिक क्षेत्र में आगे बढ़े हुए थे । ये महानुभाव आज हमारे बीच में नहीं हैं । हमें इसका गहरा दुःख है । उनके अभाव के अन्दर और उनके संसार से चले जाने पर मैं अपनी पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं और गहरा दुःख प्रकट कर रहा हूं । साथ में शोक-संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना भी जाहिर कर रहा हूं । साथ ही यह महसूस कर रहा हूं जो उनके गुण थे, उनको हम अपने अन्दर लेवें, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

इन्हीं शब्दों के साथ में उन छहों महानुभावों के प्रति अपनी ओर से, अपने दल की ओर से, अपनी पार्टी की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं ।

श्री अध्यक्ष : बड़े दुःख की बात है कि आज हमको एक साथ इस देश की 6-6 महान् विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित करनी पड़ रही है । मजबूरी है, इस प्रकृति के प्रवाह से कौन बच सकता है ? सदन के सम्माननीय नेता महोदय ने और माननीय सदस्यों ने इन दिवंगत आत्माओं के प्रति जो भाव व्यक्त किये हैं उनमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं । डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् हमारे देश की एक महान् विभूति थे और विश्व के माने हुए दार्शनिकों में से थे । वे भारत के सिर को ऊंचा करने वाले चन्द लोगों में से थे । मैं उनको प्राचीन काल के तपस्वियों और ऋषियों की श्रेणी में मानता हूं । जो

(श्री अध्यक्ष)

उनका रहन सहन था, जो उनकी सादा जिन्दगी थी और उच्च विचार, Simple living and high thinking. थी। उसको देखते हुए अनायास ही एक बहुत प्राचीन युग भी याद आ जाता है। मैं उनको शंकराचार्य और विवेकानन्द के दर्जे के लोगों में भी मानता हूं। माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने विवेकानन्द से उनकी जो तुलना की है वह बहुत सही की है।

हमारे देश के दार्शनिक तथा भारतीय संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाले तीन महान् ग्रन्थ हैं, गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद्। इन सभी पर यहां के दार्शनिकों ने बहुत कुछ लिखा है। डा. राधा कृष्णन् भी इन तीनों पर ही अपने अद्वितीय भाष्य छोड़ गये हैं। भाष्य और भी हैं, लेकिन डा. राधाकृष्णन् की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने प्राचीन और आधुनिक युग का समन्वय किया है, पूर्व और पश्चिम का समन्वय किया है। पूर्व के और पश्चिम के दर्शनों का अध्ययन करके उनका निचोड़ दिया है और सामान्यत: उनका समन्वय भी किया है। आपने अखबारों में पढ़ा होगा कि लन्दन से उनको विश्व विख्यात दार्शनिक सेवाओं के उपलक्ष में उनकी अनुपस्थिति में 50 या 51 हजार पौण्ड का अवार्ड दिया गया था। यह लन्दन के हाई कमिश्नर ने उनको दिया था।

डा. राधाकृष्णन् संस्कृत के विद्वान् तो थे ही, लेकिन आंग्ल भाषा की विद्वत्ता रखने वाले व्यक्ति भारत में बहुत कम हैं, उसमें भी आपकी विद्वत्ता अद्वितीय थी। जिस तरह का भाषण लोगों ने उनका सुना है वे उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। अंग्रेजी भाषा पर इतना अधिकार पूर्ण भाषण मैंने भारत में दो ही राजनीतिज्ञों से सुना है, एक हैं भारत-कोकिला सरोजनी नायडू और दूसरे डा. राधाकृष्णन जैसे टकसाल में से गढ़े हुये सिक्के निकलते हैं, ऐसे गढ़े हुए और उपयुक्त और सारगर्भित शब्द निकलते थे। इस तरह के विचारक, लेखक, बोलने वाले और भाषण देने वाले बहुत कम मिलेंगे।

भसेरतपुर आने वाले माननीय सदस्य ने ठीक ही कहा है कि डा. राधाकृष्णन् के बारे में हम लोग जितना कह सकते हैं वह थोड़ा है। कितना बहुमुखी प्रतिभा वाला जीवन उनका रहा है। उन्होंने अनेक क्षेत्रों में काम किया है। एक एक को कहने लगे तो बहुत कह सकते हैं। राजदूत की हैसियत से वे मास्को में रहे, वाइस चान्सलर के रूप में वे रहे, अध्यापक के रूप में रहे, उप-राष्ट्रपति के रूप में वे रहे, और राष्ट्रपति के रूप में वे रहे – अनेक रूपों में उन्होंने देश की सेवा की है। लेकिन मैं ऐसा मानता हूं सबसे बड़ी देन जो विश्व को है और सदैव भारत में रहने वाली है वह उनकी फिलासफी – दर्शन शास्त्र है। जिस रूप में शास्त्रों का इन्टरप्रिटेशन किया है वह हमेशा कायम रहने वाला है। बहुत बड़ी तादाद में उन्होंने पुस्तकें लिखी हैं, लेकिन उनमें भी दो वाल्यूम्स में–'हिस्टरी आफ इन्डियन फिलासफी,–भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास है। और जिन तीन ग्रन्थों का मैंने निवेदन किया है उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र, इन तीनों के इन्ट्रोडक्शन को ही आप पढ़ें, आप मुग्ध हो जायेंगे। उन्होंने आजकल के युग को ध्यान में रखते हुए इन्टरप्रिटेशन किया है और सरल भाषा में, कठिन भाषा में भी किया है लेकिन भूमिका बहुत सरल भाषा में है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं,

(श्री अध्यक्ष)
'हिस्ट्री ग्राफ इंडियन फिलासफी, 'हिन्दू व्यू ग्राफ लाईफ,' 'ईस्ट एण्ड वेस्ट', 'फेथ एण्ड रिलीजन' बहुत भारी पुस्तकें हैं जो हमेशा पढ़े जाने योग्य हैं। यह कोई साधारण पुस्तकें नहीं हैं।

उनके ऊपर बहुत बातें हैं कहने के लिए, मुझे याद है एक दफा की बात जब वह उप-राष्ट्रपति थे मुझे उनके साथ भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इतना सूक्ष्म भोजन और इतना कम भोजन वह करते थे, यह देख कर आश्चर्य होता है कि साधारण आदमी कैसे जिन्दा रह सकता है। इतना कम भोजन वह करते थे और इतना सात्विक भोजन करते थे कि कैसे जिन्दा रहे यह हम लोग सोच सकते हैं। ऐसा ही उनका रहन-सहन, उनके कपड़े और उनका पहनावा था। यह आप सभी ने देखा होगा। मैं उनके प्रति आप सब की ओर से और स्वयं अपनी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

23 वर्षों की इस धारा सभा के इतिहास में–सन् 1952 से 1975 तक हमने हर साल कुछ न कुछ शोक प्रस्ताव पारित किये हैं लेकिन आज जो शोक प्रस्ताव हम पारित करने जा रहे हैं, जिस पर अपने भाव प्रकट कर रहे हैं, आज एक विशेष गम्भीर अवसर लगता है और इस प्रकार का अवसर पहली दफा आया है। इस धारा सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री आचार्य का निधन हुआ। इस धारा सभा के इतिहास में अध्यक्ष का पहली दफा देहान्त हुआ है और उनको श्रद्धांजलि हम पहली बार अर्पित कर रहे हैं। यह बहुत गम्भीर मामला है और हमारे लिए बड़ा दुखद है और रंज देने वाला है। इस विधि की विडम्बना को कौन समझ सकता है कि कुछ अरसे से पहले जो खुद औरों को श्रद्धांजलि दे रहे थे–आपको याद होगा चिम्मन सिंह जी भाटी को किन दर्द भरे शब्दों में अभी कुछ दिनों पहले ही वह श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे, आज उन्हीं को श्रद्धांजलि अर्पित करने का दुर्भाग्यपूर्ण अवसर हमको मिला है।

महर्षि अरविन्द ने कहा है जीवन एक पहेली है। मैं कहता हूं, मौत भी एक पहेली है। इसको भी किसी ने समझा नहीं। जो गया है वह आया नहीं और जिन्दा आदमी मौत के बाद कभी आ नहीं सकता। सारा कल्पना और अन्दाज ही अन्दाज पर चलता है। मैं मौत को पहेली इसलिए कह रहा हूं कि किस वक्त क्या हो, कहा नहीं जा सकता। आचार्य जी के बारे में क्या यह समझा जा सकता था कि उनके शरीर का अन्त हो सकता है ? यह स्वप्न है। जब वह कार में जा रहे थे, श्री ज्वाला प्रसाद जी और इनका बच्चा–बड़ा एक्सीडेन्ट हुआ था, उसमें वह बच गये लेकिन उस एक्सीडेन्ट में उनके बच्चे का देहान्त हो गया और अब जब कुछ तकलीफ विशेष नहीं थी, दर्द था मामूली और घर में बैठे सो रहे थे उस दर्द ने दो घन्टे में उनकी जान ले ली। कोई बात समझ में आती नहीं कि जब उनको मर जाना चाहिए था उस समय वे जीवित रहे और जब इन्हें जिन्दा रहना चाहिये था उस समय वे मर गये। इसलिये मैंने कहा था कि मौत भी एक पहेली है।

आचार्य जी एक गतिशील पुरुष थे। और गति ही जीवन है, वह एक डाईनेमिक पर्सनेलिटी के व्यक्ति थे वह प्राणवान थे और हर वक्त कुछ न कुछ करने वालों में से थे।

(श्री अध्यक्ष)

उनमें बहुगुणी प्रतिभा पाई जाती थी। अनेक रूप में अनेक कामों को संचालन करते हुए हमने उन्हें देखा है। मंत्री की हैसियत से भी, इस सदन के अध्यक्ष की हैसियत से भी, कांग्रेस में भी, विरोधी दल में भी और साहित्यकार की हैसियत से भी, पत्रकार की हैसियत से भी, दोस्त की हैसियत से भी, सभी हैसियत से हमने उन्हें देखा है, और परखा है। ऐसी महान आत्मा का, ऐसे बड़े दोस्त का, ऐसे बड़े पार्लियामेन्टेरियन का, ऐसे बड़े साहित्यकार का हमारे बीच में से जाना निश्चय ही हमारे लिए दुःख का विषय है। वह गये, हमको रन्ज दे गए, हमको तकलीफ दे गए। जब मैं इधर देखता हूं जहां वह बैठते थे, मुझे खयाल होता है :

गम देकर चला गया कोई,
हंसते हंसते रुला गया कोई।
यह जगह आज क्यों सूनी सूनी है,
क्या यहां से चला गया कोई ?

मैं इतना ही कह सकता हूँ कि भगवान उनकी आत्मा को शांति दे और उनके परिवार को सहन शक्ति दे।

श्री खंडूभाई देसाई स्वतंत्रता सेनानियों में से रहे हैं और उस जमाने में आजादी की लड़ाई के अग्रणी लोगों में से रहे हैं। कई क्षेत्रों में उन्होंने काम किया लेकिन श्रमिक क्षेत्र में श्री खण्डूभाई ने विशेषतया काम किया। वह राज्यपाल भी रहे यह आपको मालुम ही है।

इसी तरह से कुमारी पद्मजा नायडू की सामाजिक क्षेत्र में और विशेष रूप से रेडक्रास की सेवाओं में और कला के क्षेत्र में, बहुत बड़ी सेवायें रही हैं। इन दोनों महान् आत्माओं को भी मैं श्रद्धांजलि आप सबकी ओर से अर्पित करता हूँ।

श्री रमेशचन्द्रजी भार्गव सन् 1952 में अजमेर की धारा सभा के सदस्य चुने गये थे। 1956 में जब अजमेर का विलय राजस्थान में हुआ तो वहां की धारा सभा के जितने भी सदस्य थे सब यहां की धारा सभा के सदस्य हुए थोड़े समय के लिए। सन् 1957 में इलेक्शन हो गए थे दुवारा। वह अजमेर की धारा सभा में उपाध्यक्ष भी रहे और अध्यक्ष भी रहे। श्री रमेशचन्द्र भार्गव से मैं परिचित रहा हूँ काफी लम्बे अरसे से। वह एक ऐसे परिवार से आये थे जिसने स्वतंत्रता के युद्ध में काफी भाग लिया और मान्यता भी प्राप्त की, उसको स्वीकार किया गया है, उनकी सेवाओं को इस बारे में। रमेशचन्द्रजी खुद भी सामाजिक कार्यकर्ता थे, अच्छे कार्यकर्ता थे।

इसी तरह से श्री श्रीराम जी बासोतिया जो कि द्वितीय धारा सभा के सदस्य चुनकर आये थे। वह शेखावाटी के अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता थे और यहां भी उन्होंने सक्रिय रूप से अपने कर्तव्यों का पालन किया। उनके छोटे भाई श्री सांवरमल बासोतिया यहां के सदस्य रहे हैं। मैं श्री रमेशचन्द्र भार्गव और श्रीराम बासोतिया इन दोनों आत्माओं के प्रति भी अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

अब दो मिनट मौन खड़े होकर इन सब के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सदन ने दो मिनिट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की)

Page No 14

(14)

सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 7 मई, 1975 के प्रातः 8 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही मध्याह्न पूर्व 9.10 बजे बुधवार दिनांक 7 मई, 1975 के प्रात 8 बजे तक के लिए स्थगित की गई)।

----

(15)

शुद्धि-पत्र

मंगलवार, दिनांक 6 मई, 1975

स्तम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
4	ऊपर से 10	विखाई	दिखाई
11	ऊपर से 3	वि	कि
12	अंतिम 35	हृभारे	हमारे
16	ऊपर से 9	उहोंने	उन्होंने
18	ऊपर से 9	वासोतियाजी	बासोतियाजी
18	ऊपर से 26	861	86½
18	ऊपर से 31	गी ।	गीता
19	ऊपर से 12	ि तनी	कितनी
20	ऊपर से प्रथम	आय	आया
20	ऊपर से 27	ौर	और
21	ऊपर से 10	तुलन	तुलना
21	ऊपर से 11	श	देश
22	ऊपर से 8	भसेरतपुर	भरतपुर
23	ऊपर से 10	सौभग्य	सौभाग्य